'संचार दक्षता में सुधार' विषयक चार दिवसीय प्रशिक्षण प्रारम्भ

पंतनगर। 24 अगस्त, 2009। राज्य कृषि प्रबन्धन एवं प्रसार प्रषिक्षण संस्थान,उत्तराखण्ड (समेटी–उत्तराखण्ड) द्वारा आयोजित 'संचार दक्षता में सुधार' विषयक चार दिवसीय प्रषिक्षण कार्यक्रमआज से प्रारम्भ हुआ। प्रशिक्षण के उद्घाटन अवसर पर निदेषक, समेटी–उत्तराखण्ड, डा. के.आर. कनौजिया ने अपने सम्बोधन में कहा कि संचार एक ऐसी प्रक्रिया है जिसके द्वारा एक व्यक्ति दूसरे व्यक्तियों के विचारों, मनोवृत्तियों व सूचना में भाग लेता है। प्रसार कार्यकर्ता जो एक षिक्षक के रूप में ग्रामीण जनता को नये ज्ञान के सम्बन्ध में बताता है उसको जनता तक अपने कार्यक्रम पहुंचाने तथा जनता की समस्या अनुसंधान केन्द्र तक पहुंचाने के लिए प्रयोग करने पड़ते हैं, जिनको हम संचार के साधन कहते हैं। संचार एक द्विमुखी प्रक्रिया है। प्रत्येक जीवित व्यक्ति किसी न किसी रूप में संचार प्रक्रिया से जुड़ा है। सफल नेता, पेषेवर, षिक्षक, डाक्टर की भांति प्रसार कार्यकर्ताओं में भी सफल कार्य सम्पादन के लिए संचार दक्षता आवष्यक है। संचार में बोलना है, पर सिर्फ बोलना ही संचार नहीं है, सुनना भी प्रभावषाली संचार हेतु आवष्यक है। संचार दक्षता हमारे व्यक्तित्व का अभिन्न अंग है, यह हमारे व्यक्तित्व को प्रकाषित करता है। एक महत्वपूर्ण शोध से पता चला है कि व्यक्ति पहले 10 सेकेण्ड में जो इम्प्रेषन बनाता है, वह काफी प्रभाव डालता है। उन्होनें कहा कि प्रतिभागी प्रषिक्षण प्राप्त करके संवाद कौषल में दक्ष होकर अपने कार्य को सुचारू रूप से सम्पादित करने में सक्षम होंगे।

निदेषक संचार, डा. बी. कुमार ने संचार के महत्व एवं उपयोग पर प्रकाश डालते हुए बताया कि संचार हमारे जीवन का एक आवष्यक अंग ही नहीं बल्कि जीवन का सत्य है। इसलिए हमें संचार को भली–भांति समझने की आवष्यकता है। संचार के अनेक साधनों के होते हुए भी सबसे अधिक प्रयोग में आने वाला संचार 'अन्तर–व्यक्तिगत' संचार है। कोई भी व्यक्ति सुबह उठने के बाद से रात्रि में सोने से पहले अन्तर–व्यक्तिगत संचार में व्यस्त रहता है। किसी से बात करना, किसी मीटिंग में जाना, घर में अनेक लोगों से अनेक विषयों एवं सन्दर्भों में बात करना है। संचार दक्षता हमारे लिए दो कारणों से महत्वपूर्ण है, पहली बात यह है कि हम अपने समाज में लोगों की सेवा करते हैं तथा यह हमारे अपने अस्तित्व के लिए भी आवष्यक है। आज जो अच्छी तरह से बातचीत करके दूसरे को प्रभावित कर लेता है, वही सफलता प्राप्त करता है एवं दूसरे को भी सफल बनाता है।

इस प्रषिक्षण कार्यक्रम का संचालन कर रहे सह निदेषक, प्रसार षिक्षा, डा. आर.पी. सिंह ने बताया कि प्रषिक्षण कार्यक्रम के अन्तर्गत बोलने में दक्षता, बोलने की कला का परीक्षण, समूह में कार्य करना एवं भागीदारी सुनिष्चित कराना, बैठक को प्रभावी बनाना, सामान्य रिपोर्ट लेखन की विधि, कम्प्यूटर का संचार हेतु प्रयोग, दल में कार्य करने हेतु संचार दक्षता पर अभ्यास इत्यादि शीर्षकों पर विष्वविद्यालय के विभिन्न वैज्ञानिकों द्वारा वार्ता एवं प्रयोगात्मक प्रषिक्षण दिया जा रहा है। इस प्रषिक्षण में उत्तराखण्ड राज्य के विभिन्न जनपदों से आये कृषि एवं सम्बन्धित विभागों के अधिकारी प्रतिभाग कर रहे हैं। इस अवसर पर सलाहकार संचार केन्द्र, डा. बी.बी. सिंह भी उपस्थित थे।

ई.मेल. चित्र सं.–2. प्रशिक्षण के उद्घाटन के अवसर पर प्रशिक्षणार्थियों को सम्बोधित करते हुए निदेशक प्रसार शिक्षा, डा. के.आर. कनौजिया।